भारत में मध्ययुगीन काल के दौरान, भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रांतीय साम्राज्य और राजवंश उभरे। ये राज्य अक्सर बड़े साम्राज्यों के साथ अस्तित्व में थे और मध्ययुगीन भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। यहाँ मध्यकालीन भारत के कुछ प्रमुख प्रांतीय साम्राज्य हैं:

- चोल राजवंश **(9**वीं से **13**वीं शताब्दी**):**
  - चोल राजवंश दक्षिण भारत के सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली राजवंशों में से एक था। इसने चोल नाडु क्षेत्र, मुख्य रूप से आधुनिक तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
  - चोल अपनी नौसैनिक शक्ति, दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार संबंधों और कला और वास्तुकला में योगदान के लिए जाने जाते थे। उन्होंने कई मंदिरों का निर्माण कराया, जिनमें तंजावुर का प्रसिद्ध बृहदेश्वर मंदिर भी शामिल है।
- चालुक्य राजवंश **(**छठी से **12**वीं शताब्दी**):**
  - चालुक्य राजवंश ने वर्तमान कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश सहित दक्षिण और मध्य भारत के विभिन्न हिस्सों पर शासन किया।
  - बादामी चालुक्य और बाद में पश्चिमी चालुक्य राजवंश की प्रमुख शाखाएँ थीं। उन्होंने मंदिर वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया, विशेषकर चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा मंदिरों के निर्माण में।
- राष्ट्रकूट राजवंश **(8**वीं से **10**वीं शताब्दी**):**
  - राष्ट्रकूटों ने दक्षिण और मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर शासन किया, उनकी राजधानी कर्नाटक में मान्यखेता (वर्तमान मालखेड) थी।
  - वे कला, साहित्य और जैन धर्म के संरक्षण के लिए जाने जाते थे। एलोरा का कैलाश मंदिर उनके काल की एक उल्लेखनीय वास्तुशिल्प उपलब्धि है।
- होयसला राजवंश **(10**वीं से **14**वीं शताब्दी**):**
  - होयसलों ने दक्कन क्षेत्र पर शासन किया, मुख्य रूप से आधुनिक कर्नाटक में।
  - वे अपने जटिल और खूबसूरती से गढ़े गए मंदिरों के लिए जाने जाते थे, जो उनकी विशिष्ट होयसला स्थापत्य शैली की विशेषता थी। बेलूर, हलेबिदु और सोमनाथपुरा के मंदिर इसके उल्लेखनीय उदाहरण हैं।
- गहड़वाला राजवंश **(11**वीं से **12**वीं शताब्दी**):**
  - गहड़वाला राजवंश ने उत्तर भारत पर, विशेष रूप से कान्यकुब्ज (आधुनिक कन्नौज) और आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया।
  - वे साहित्य के संरक्षक थे, और उनके दरबार में चंद बरदाई जैसे प्रसिद्ध कवियों की रचनाएँ देखी गईं, जिन्होंने महाकाव्य पृथ्वीराज रासो की रचना की थी।
- चंदेल राजवंश **(10**वीं से **13**वीं शताब्दी**):**
  - चंदेला राजवंश कला के संरक्षण और वर्तमान मध्य प्रदेश में प्रसिद्ध खजुराहो मंदिरों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।
  - मंदिर अपनी जटिल कामुक मूर्तियों के लिए जाने जाते हैं और हिंदू और जैन स्थापत्य शैली के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- गुजरात सल्तनत **(13**वीं शताब्दी के अंत से **15**वीं शताब्दी तक**):**
  - गुजरात सल्तनत पश्चिमी भारत में एक महत्वपूर्ण प्रांतीय साम्राज्य के रूप में उभरा, जिसकी राजधानी अहमदाबाद थी।
  - इसने इस्लामी दुनिया और अफ्रीका के साथ समुद्री व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुजरात के सुल्तानों ने प्रभावशाली मस्जिदें और महल बनवाये।

इन प्रांतीय राज्यों ने, दूसरों के बीच, मध्यकालीन भारत की सांस्कृतिक और स्थापत्य विविधता में योगदान दिया। वे अक्सर एक दूसरे के साथ और बड़े साम्राज्यों के साथ बातचीत करते थे, जिससे व्यापार, बौद्धिक आदान-प्रदान और पूरे उपमहाद्वीप में कला और संस्कृति के प्रसार में आसानी होती थी।